18/6/1966 शनिचरवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– हमारे तीरथ न्यारे हैं, यही धरती के तारे हैं.....

ओमशांति! मीठे–2 रूहानी बच्चे इस गीत के अर्थ को तो समझ गए। हम आत्माओं का; क्योंकि अभी आत्मा की बात हुई ना और प्रिन्सीपल वा मुख्य है ही आत्मा। अभी तुम बच्चे जानते हो कि हमारी आत्मा परमपिता परमात्मा के सन्मुख बैठे हैं अथवा परम आत्मा के सन्मुख बैठे हैं। तुम्हारी आत्मा, रूह वा सोल, सुप्रीम सोल के सामने बैठते हैं। तुमको भी शरीर है। इनको सिर्फ लोन लिया हुआ शरीर है। ये तुम बच्चे अच्छी तरह से जान चुके हैं। अच्छा, यात्रा पर सदैव कोई गुरू ले जाते हैं और गुरू तो अनेक होते हैं भक्ति के, ढेर के ढेर। भक्तिमार्ग में गुरु ढेर के ढेर। यूँ तो भारत में वास्तव में स्त्री का पति, उनको भी कहा जाता है इनको भी गुरू समझो, ईश्वर समझो, सब कुछ समझो। भारत में इतने गुरू। बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं। सभी बच्चे हो ना! ये तो जानते हो ना– अभी हम बेहद बाप के बेहद के बच्चे हैं। बेहद का वर्सा फिर से लेने आए हैं अर्थात् हमको अभी दुर्गति से सद्गति को पाना है। ये तो निश्चय है ना, सारी दुनिया दुर्गति में है या कहें– हम पतित हैं, पावन होने के लिए बुलाते हैं– पतित को पावन करने वाले। तो वो भी तो गुरू हुए; क्योंकि गुरू ही साथ में ये गंगा,जमुना,त्रिवेणी वगैरह पर ले जाते हैं। तो गुरू ढेर हैं ना। कितने गुरू आते होंगे वहाँ? ढेर के ढेर गुरू आते हैं। कोई का 100 होगा, कोई का 50 होगा, कोई छोटे–2 भी आते हैं। किसको 50/60 भी फॉलोअर्स हैं, शिष्य हैं। कथा सुनाते हैं। कोई को तो लाखों भी हैं। कोई....करोड़ों भी हैं। जैसे देखो, खुर्दों का गुरू वो आगाखाँ, पता है कितने उनके फॉलोअर्स हैं और कितना उनका रिगार्ड है! फिर कुछ भी करता हो, बड़े ठाठ वाला हो। ...शादी करने वाला हो, कुछ भी करने वाला हो। तुम्हें मालूम है कितना उनका मान रखते हैं। बाबा ने समझाया ना, भक्तिमार्ग में गुरू अनेक, ढेर के ढेर। पीछे वो भी नंबरवार। कोई गुरू की कमाई पदमों। आगाखाँ की कमाई बहुत–2। गुरू को हीरे में तौल करके उनको दान किया था उनके शिष्यों ने। तुम लोग इतना पढ़ते–लिखते नहीं हो, सुनते नहीं हो। एक तरफ में ये, दूसरे तरफ में उनका गुरू। उसको बाबा नहीं कहते हैं, टीचर नहीं कहते हैं, 'गुरू' सिर्फ एक नाम। देखो, गुरू का प्रभाव कितना भक्तिमार्ग वालों का। उनको ये हीरे एक तरफ में, दूसरे तरफ गुरू। वो हीरे उनको दान करते हैं। बताओ, कितना होगा? एक तरफ में सोना। सोना तो आजकल बहुतों को वजन करके देते हैं। फिर दूसरी धातु होती है सोने से भी महँगी, उसको अंग्रेज़ी में प्लेटिनम कहते हैं, जो जेवर के काम में और इनके बारूद के काम में होते हैं। बहुत सख्त होता है, सोने से भी बहुत सख्त होता है। वो इनके बहुत काम में आता है। वो भी वजन करके उसको दिया था....। देखा गुरू का मर्तबा! अभी ऐसे गुरू तो बहुत हैं। बताओ, अभी इस गुरू को, जो तुम जानते हो, क्या देंगे! इनको तौलेंगे वजन में? बाबा बोलते हैं तुम इनको हीरे वजन करके देंगे? अच्छा, वजन हो सकता है? इनका वजन तो कुछ है ही नहीं। खुद का ही वजन नहीं है। चलो, शिव की बिन्दी को एक तरफ में रखते हैं..... देखो, ये गुरू तुम्हारा कितना वण्डरफुल है! तो बाप बैठ करके, वो वण्डरफुल उनको गुरू बैठ करके समझाते हैं। क्या करेंगे? . ...इनको कोई कुछ भी वजन नहीं कर सकते हैं। इनका वजन ही नहीं है। सबसे हल्का, इसको कहा जाता है सबसे सूक्ष्म। आत्मा सूक्ष्म है ना, तो उनका बाप भी सूक्ष्म। अब फिर देखो ये तुम्हारा गुरू एक। अथाह गुरू भक्ति के और ज्ञान के गुरू एक हैं। ये तुम समझते हो, जानते हो। नहीं तो वो तो ज्ञान सुनते हैं रोज़ जा करके ये भक्ति,शास्त्र,वेद,फलाना–2। उसका नाम ज्ञान है नहीं बिल्कुल ही। ज्ञान जिसको कहा जाता है सद्गति के लिए, कोई गुरू दे नहीं सकता है। ये बच्चों को निश्चय हुआ ना। तो गुरू के पास काहे वास्ते जाते हैं? बाप के पास आते हैं उनका वर्सा लेने। टीचर के पास जाते हैं पढ़ने, सोर्स ऑफ इनकम, शरीर पेट की पूजा के लिए। अच्छा, गुरू

के लिए काहे के वास्ते जाते हैं? सद्गति तो दे नहीं सकता है। देखो, कुछ नहीं मिलता है। बाप से भी मिलता है कुछ। देखो, बाप बताते हैं फर्क एकदम। गुरू की कितनी महिमा है! कितना वजन कराते हैं! और यहाँ बाप बैठकर समझाते हैं बाप से कुछ भी वर्सा मिलता है। टीचर से भी कुछ वर्सा मिलता है। गुरू से कुछ भी नहीं मिलता है, खाली देखते हैं गुरूओं को। यहाँ तुम क्या देंगे? देंगे कुछ? नहीं, तुम जानते हो कि शिवबाबा, वो तो दाता है। वो तो कभी ले नहीं सकते हैं। भगवान लेता नहीं है, देता है। अच्छा, भगवान को सभी देते भी हैं। हम ईश्वर अर्थ ये दान करते हैं। अरे भई, क्यों? हमको दूसरे जन्म में इनका एवजा मिलेगा। हरेक कोई कामना तो रखते हैं ना। गुरू में भी कामना होती है। सद्गति की होती है। ..कोई गुरू में, हमको पुत्र चाहिए....फलाना चाहिए, ये चाहिए, ये चाहिए, बहुत कामनाएँ रखते हैं ना। अभी तुम लोग देखो बाप, बस इन जैसी निष्काम सेवा और कोई करते हैं? सो भी निष्काम सेवा कैसे? बच्चों को विश्व का मालिक बनाना और खुद बिल्कुल न बनना। देखो, तुम सुखधाम के मालिक बनते हो। बाबा तो सुखधाम का मालिक नहीं है। आत्मा–परमात्मा तो सदैव शांत स्वरूप है। अभी देखो, इनको कहा जाता है ना– सुख का सागर, शांति का सागर, पवित्रता का सागर। बच्चों को यहाँ हर एक बात अच्छी तरह से समझना है। वो एक बात तो ठीक है, समझाया है। फिर अगर एक बात से ही जीवनमुक्ति, तो फिर इतना समय क्यों लगना चाहिए? है तो बिल्कुल ठीक। बाबा, वर्सा स्वर्ग का ....। अभी देखो, इतना टाइम क्यों कहते हैं कि सागर है ज्ञान का, वो मस भी बनाओ और जंगल का कलम बनाओ तो भी एण्ड नहीं। अभी शुरू से ले करके तुम सुनते रहते हो, लिखते जाओ, पता है कितना वो पुस्तक बन जाएँ। ढेर ..बड़ा वाला पुस्तक बन जाए जो अगर तुम लिखते हो। बहुत वैल्यूबल है। ये ग्रंथ गीता वो सबसे वैल्युबल है ये नॉलेज और तुम रोज़ लिखती हो। लिखते–2.. करते–2 कागज़ों को क्या करती हो? यूँ जिसके पास खज़ाना बहुत होता है वो उसको क्या करेगा? खजाना तो धारण किया जाता है ना। अभी देखो, तुम बुद्धि से धारण किए जाते हो। बस, पीछे वो काम का नहीं। ऐसे तो नहीं है कि गीता सुन करके, भाषण सुन करके फाड़ डालते हो; क्योंकि बुद्धि में बैठ गया। नहीं...तुम जन्म–जन्मांतर वही चीज़, हूबहू वही गीता, वही भागवत, वही रामायण, वही फलाना, वही वेद, वही ग्रंथ... जन्म ब जन्म सुनते आए हो और डाका उतरते आए हो। यहाँ बाप तुम बच्चों को ये ज्ञान सुनाते रहते हैं। ज्ञान की बातें हैं ना। जो कुछ सुनते रहते हो वो फाड़ते जाते हो। उसकी कोई दरकार ही नहीं। फिर तो जो धारण करने की चीज़ है सब बुद्धि; क्योंकि तुम जानते हो ये परम्परा तो चलने वाली चीज़ है नहीं। कुछ भी नहीं। जो शास्त्र,वेद,ग्रंथ है वो भी जल जाएगा। तुम्हारा बाकी जो है ज़रा पुर्जा–पन्ना–पोथी, वो भी जल जाएगा। वो अथाह है। तुम सारी दुनिया में, सभी लैंग्वेजिज़ में गीता बनी हुई है... और ये कितने हैं? कुरान कितने होंगे, पुराण कितने होंगे, बाइबल कितने होंगे! तुम समझते हो? कि इतने–2 शास्त्र हैं, जैसे कहा जाता है ना– गवर्मेन्ट के पास इतने फाइल्स हैं, जो वहाँ से ले जाओ आबू, वो सारी फाइल्स रखो तो भी ढेर हो जावे। वैसे अगर तुम ये ज्ञान के, वो भी ढेर हो जावें, पर इतना नहीं। शास्त्रों का भी इतना ढेर हो जावे। कुछ भी काम का नहीं। अभी देखो तुमको ये परिचय मिलता है बाप का। इसका बाप आ करके अपना परिचय देते हैं? बस, अपना परिचय दिया, काफी है वास्तव में; क्योंकि बाप का परिचय देने से, रचता को जानने से, रचना तो सृष्टि है ना। वो तो बुद्धि से झट आ जाता है कि सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग ये है रचना। फिर संगमयुग भी, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग। हाँ, इसमें पुनर्जन्म में आते रहते हैं। ये बुद्धि कहती है कि बरोबर जो सतयुग में आते होंगे, उनके पुनर्जन्म जास्ती होते होंगे। पीछे जो आएँगे कम, पीछे जो आएँगे कम। अच्छा, ये चक्कर में, जब चक्कर फिरेगा तो जो पहले आए होंगे, सतयुग में सभी पहले आएँगे। पीछे त्रेता वाले, द्वापर वाले, कलहयुग वाले, ये चक्कर भी तो समझाना

अच्छा है ना। बस, इस चक्कर को घर बैठे याद करना। तुम्हारी देखो, सुना ना– हमारे तीर्थ बिल्कुल न्यारे। अभी बुद्धि से लो जन्म–जन्मांतर की यात्रा। तुम्हारी इस एक जन्म की यात्रा। और सो भी कोई तकलीफ नहीं। देखो बच्चे, बहुत बुद्धि से काम लेना है। कोई बिल्कुल ज़री भी तकलीफ नहीं यात्रा की। इसको रूहानी यात्रा कहा जाता है। वो जिस्मानी यात्रा में देखो कितनी तकलीफें होती हैं और जन्म ब जन्म कितना! तभी बाबा कहते हैं ना– देखो, भक्तिमार्ग में अनेक गुरू, अनेक जन्म में दूसरे–2 गुरू। हर जन्म में दूसरा गुरू। उसमें भी एक गुरू नहीं; एक,दो,तीन,चार,पाँच,आठ,दस गुरू भी करते हैं। जैसे बाबा ये अपना मिसाल देते हैं कि मैंने 10/12 गुरू, दर्जन गुरू किया होगा। अच्छा, आगे जन्म में पता नहीं कितना किया होगा। उसके आगे जन्म में पता नहीं कितना किया। कितने गुरू किए होंगे तुमने! और सो भी कोई एक–2 थोड़े ही। ..तुम देखो सारी मनुष्य सृष्टि में कितने गुरू हैं। ढेर के ढेर हैं, करोड़ों, लाखों। अगर भारत में लो तो करोड़ों; क्योंकि पति भी गुरू, पीछे ये भी गुरू हो गया। कितना फिर, ये भक्तिमार्ग में सद्गति किसकी भी न हो, और ही दुर्गति हो। तो बच्चों ने समझा कि ..भक्तिमार्ग में ढेर के ढेर गुरू, ज्ञान के लिए एक है– सुप्रीम बाबा, ज्ञान का सागर।.. ज्ञान से होती है सद्गति। तो ज्ञान का सागर, बस और क्या चाहिए! सागर माना सर्व की सद्गति। सर्व की सद्गति में क्या आ जाते हैं? अरे बच्चे, सब आ जाते हैं। अरे, ये तत्व भी। तत्वों की भी सद्गति होती है। ये तमोप्रधान है सृष्टि, ये तमोप्रधान है वायु। देखो, कितना तूफान लगता है! ये धरती कितनी तमो! कितने अर्थक्वेक्स होते हैं! कितना नुकसान कर... सब दुःख देने वाले हैं। ये तुम बच्चे जानते हो कि सतयुग में कोई भी चीज़ दुःख नहीं देती है एक/दो को। तभी बाबा कहते हैं, सतयुग के मालिक बनने वाले हो ना। मीठे बच्चे, याद रख देना, बाबा है दुःख हर्ता, सुख कर्ता। तो तुम भी हो इनके बच्चे। तुम किसको भी दुःख नहीं दे सकते हो। और ही रास्ता बताना होता है सुख का वर्सा पाने के लिए। इसलिए बाबा कभी–2 कहते हैं– देखो बच्चे, अगर किसको तुम दुःख देंगे; क्योंकि तुमको है ही सुख देना। बाबा आ करके सुख देते हैं। ऐसा सुख देते हैं जो दुःख का नाम–निशान नहीं। अभी तुम बच्चे जानते हो, बिल्कुल तहकीकात हो गई है– हम बाप से 21 जन्म स्वर्ग का सुख पाने के लिए, वर्सा पाने के लिए यहाँ आते हैं। ठीक है ना। देखो, सब अगर आवाज़ करेंगे, क्या करेंगे, क्या कुछ लिख करके देने का है! स्टूडेन्ट बने हुए हो ना। तुम्हारे दिल में ये है बिल्कुल अच्छी तरह से कि हम बाबा से स्वर्ग का सुख लेते हैं। हमारे सभी दुःख दूर हो जाएँगे। 21 जन्म में बाबा हमको क्या देते हैं? बिल्कुल एक जैसे कोई संजीवनी बूटी देते हैं सुरजीत करने के लिए, जो फिर कभी हम 21 जन्म मूर्छित न बनेंगे। और कौन–सी है वो संजीवनी? मन्मनाभव। देखो, कितना महत्व है इस चीज़ का; परन्तु वो कृष्ण का नाम डालने से महत्व सारा चला गया। मन्मनाभव का सारा महत्व बिल्कुल चला गया। ये ड्रामा। बाप फिर समझाया ना, फिर ऐसा होगा। सिर्फ एक अक्षर, एकज भूल। बाबा कहते हैं ना एकज भूल से ये भारतवासी नर्कवासी बनते हैं। लड़ाई लगती है। सो तो बरोबर। अभी देखो कहते हो और होना भी ऐसे ही है। और फिर ऐसे ही कहेंगे, हमने कहा था ना कि ये ब्रह्माकुमारियाँ भारत का विनाश करेंगी। तो बरोबर तुम कहते ही हो, हमको भारत का विनाश करना ही है। बाप भी कहते हैं विनाश तो होना ही है। पीस कैसे, स्वर्ग कैसे स्थापन होगा? कहते भी ऐसे ही हैं– अच्छा, तेरे मुख में गुलाब। हम अच्छा करेंगे ना। पुरानी दुनिया का विनाश करके हम नई दुनिया स्थापन करते हैं। पुरानी दुनिया के पीछे नई दुनिया तो ज़रूर है ही है। ज़रूर होनी ही है। इसलिए दुनिया का विनाश तो हम चाहते ही हैं बिल्कुल अच्छी तरह से। हुआ भी था। कल्प–2 दुनिया का विनाश होता है। तभी तो भारत में स्वर्ग का दरवाजा खुलता है। तो अच्छा होता है ना; परन्तु वो लोग समझें कैसे? तुम इनको आगे चलकर बहुत करेंगे और बहुत तुम्हारे लिए ये

कहेंगे– .....ब्रह्माकुमारियाँ हैं। इनके कारण ही ये सब कुछ होता है। अर्थक्वेक ये ब्रह्माकुमारियों का...। हाँ–2, ये तो ठीक है ना। हम तो ये चाहते और लिखा भी हुआ है ना कि बाप जब आते हैं तब बरोबर ये पुरानी दुनिया सभी स्वाहा होती है। तो विनाश के लिए क्या तुम यज्ञ रचते हो? कि शांत हो? नहीं, तुम्हारा यज्ञ तो एक वण्डरफुल है, जिसमें सभी आहुति डालने की है, सब खतम हो जाने वाले हैं। अरे, ये तो तुम जानो, और न जाने कोय। बरोबर ये भी तुम जानते हो कि पिछाड़ी जब होती है, मौत होते हैं और बरोबर कौरव तो मारे जाते हैं। विजय तो पाण्डवों की होती है। वो तो खतम ही हो जाते हैं। और सब खतम हो बाकी तुम जाकर पण्डे रहते हो; क्योंकि तुम ही जा करके, पांडव रह करके और राज्य करते हो यहाँ इस नई दुनिया का। तो देखो, पढ़े क्या हो, गीता,भागवत,पुस्तक वगैरह और सुनते क्या हो! तो बाप बोलते हैं– बच्चे, तुम पढ़े हो सब कुछ, गुरू किए हैं और वो क्या तुमको समझाते हैं और मैं क्या सुनता हूँ– जज योर सेल्फ। रावण की सम्प्रदाय, राम रावण की मत पर क्या कहते हैं और ये राम की मत क्या कहती है! देखो, कन्ट्रास्ट ...। रावण की मत दुर्गति को प्राप्त करती है और राम की मत सद्गति को पाती है। ये तो रात–दिन का फर्क है। उन गुरूओं और इन सुप्रीम गुरू में, जो सुप्रीम उन बाप, उन टीचर, उन गुरू और ये जो एक ही बाप है, एक ही टीचर है, एक ही सद्गुरू है– कन्ट्रास्ट तो देखो। भई, कन्ट्रास्ट हम बनाते हैं ना– मनुष्य ऐसे कहते हैं, बाप कैसे? ऐसे कहते हैं। कन्ट्रास्ट का बुक भी बनाया था ना....जो अभी बन रहे हैं फिर कि मनुष्य क्या कहते हैं और बाप क्या कहते हैं और अभी तुम भी समझते हो, मनुष्य क्या सिखलाते हैं। उनके सिखलाने से सबसे हम तो नीचे गिरते–2, जा करके रसातल। बाप, शिक्षक, गुरू जन्म ब जन्म मिलते आए हैं और बरोबर हम दुर्गति में जाते जा रहे हैं। अब हमको एक ही बाप, वही शिक्षक; क्योंकि तीन होते हैं ना, बाप के पिछाड़ी टीचर, टीचर के पिछाड़ी...में गुरू। तो ये फिर तीनों इकट्ठा। बरोबर उनका बनते हो। पहले–2 बाप, फिर तुमको शिक्षा देते हैं, फिर वो साथ में ले जाएँगे नंबरवार। वो भी नंबरवार हैं। ये भी नंबरवार एक हैं। वो नंबरवार अलग–2 हैं। तो ये नॉलेज वण्डरफुल है ना। इसीलिए कहते हैं तुम्हारी मत और गत सर्व से न्यारी। तो अभी तुम जानते हो ना किसकी? भगवान की, बाबा की। इस बाबा की, जो सबका बाबा है और सबको सद्गति देता है, सबका दुःख हर्ता–सुख कर्ता है। भई, उनकी मत देखी? बच्चे ही देखेंगे ना! और तो कोई नहीं देख सकते हैं। जो–2 आएँगे, आते रहते हैं। देखते हैं– ओहो! हमारा बाबा तो वण्डरफुल है, टीचर भी तो वण्डरफुल है, तो सुप्रीम गुरू भी वण्डरफुल है। कितना मीठा! इसलिए शिव की महिमा होती है ना– कितना मीठा, कितना प्यारा! हम कहते रहते हैं भक्तिमार्ग में– हे मीठे बाबा, आप जब आएँगे...। अब लिखा है क्या पता तो है नहीं। तुम जब आएँगे तो हम आपके ऊपर वारी जाएँगे, कुर्बान जाएँगे। फिर मेरा आप एक होगा, दूसरा कोई नहीं। न फिर हमारा बाबा होगा, न टीचर होगा, न गुरू होगा। न हमारा कोई नहीं, तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं। अभी वो कैसे होगा कि तुम्हारे सिवाय...? क्या हम सब घरबार छोड़कर तुम्हारे पास आकर बैठेंगे? ये भी तो नहीं होगा। बाबा बोलते हैं– नहीं बच्चे, गृहस्थ व्यवहार में रहकर, कहाँ भी रहो, भले अमेरिका चली जाओ, सात रोज़ का कोर्स ले, निश्चय बुद्धि हो, अमेरिका चली जाओ, कहाँ भी चली जाओ। भले मुरली न भी मिले, तो भी कोर्स ले लिया ना– मन्मनाभव, मद्याजीभव। मुझे बाप को याद करना है, मौत सामने खड़ा है। बाप को याद करना है और वर्सा पाना है। बस, बाप कहते हैं, बस याद की यात्रा में रहो। जहाँ भी रहो, याद की यात्रा .. बेड़ा पार। समझा ना। और ये तुम जानते हो कि बरोबर हमको पवित्र भी रहना है। हम देवता बनते हैं तो छी–2 भोजन भी नहीं खाना है। ये तो बुद्धि काम करेगी आपे ही। कहाँ भी चले जाओ। तो जानते हो कि बच्चे बहुत कोई अमेरिका में हैं, कोई हांगकांग में हैं, कोई कहाँ हैं। बस, वहाँ भी उन लोगों की यही मौज ; परन्तु

फिर भी यहाँ से मुरलियाँ जा सकती हैं, जाती हैं। कोई वक्त में न जाएँगी पिछाड़ी में। आफत आएगी तो मुरलियाँ छपेंगी क्या? कुछ भी नहीं छपेंगी। फिर तुम्हारा ये ज्ञान तुमको खुद काम में आएगा। हड़बड़ मच जाएगी ना। त्राहि–2, भाग–दौड़, बहुत बात मत पूछो क्या होगा; क्योंकि ये अभी तुम जानते हो बुद्धि से सब जो कुछ हम इन आँखों से देखते हैं, वो न होगा। वो सब भस्म हो जाएगा। ये हमारी देह जो देखते हैं इन आँखों से, वो भी पुरानी है ना, वो भी खतम हो जाएगी। होलिका मच जाएगी ना। सारी दुनिया की होलिका मच जाएगी। यहाँ भी मचेगी। बाकी जाकर थोड़ा बचेगा। प्रलय नहीं होती है, कायदा नहीं है। दुनिया एक है। वही नई सत–त्रेता, खाद पड़ती जाती है, पुरानी होती जाती है और फिर नई। तो ये एक दुनिया है ना। एक ही वर्ल्ड है। वर्ल्ड न्यू, वर्ल्ड ओल्ड। अरे, इसको तुम कहेंगे ये ओल्ड वर्ल्ड है एकदम। ....ओल्ड की आयु कितनी है? वो इस समय में कहेंगे– बाकी कोई 10,20,25 वर्ष कम, 5000 वर्ष है। शास्त्रों से पूछेंगे, विद्वानों से पूछेंगे इस वर्ल्ड की आयु। लाखों वर्ष है। एक सतयुग लाखों वर्ष का है। त्रेता लाखों वर्ष का है। द्वापर लाखों वर्ष का है? कलहयुग की ...ये कहते हैं 40 हज़ार वर्ष है, लाखों छूट जाता है। और है सिर्फ 5000। सतयुग में क्या होता है? त्रेता में क्या होता है? ऐसे थोड़े ही सिर्फ सतयुग,त्रेता,द्वापर को कुछ जाना ही नहीं। कोई पूछे सतयुग में क्या होता है? कुछ भी नहीं, खाली नाम। नहीं, तुम सब कुछ जानते हो सतयुग में। देखो बच्चे, ये सब बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं। दुनिया को कुछ भी नहीं, पत्थरबुद्धि है। वो तो बात न पूछो, सब झूठ ही झूठ। बात ही क्या करते हैं! जैसे जनावरों के मिसल हैं। मनुष्य हो करके, एक्टर हो करके, अगर कोई अपने इस ड्रामा के आदि,मध्य,अंत, ड्यूरेशन, प्रिन्सीपल एक्टर्स को न जानता हो तो उनको क्या कहेंगे! भई जनावर हुआ ना। मनुष्य हैं ना। वो जानते हैं ना, कहते हैं ना– वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती है। अच्छा, कैसे रिपीट होती है? ये पता नहीं। पता नहीं है तो कोई काम का नहीं रहा। ...हर एक बात अच्छी तरह से समझते हो ना। यात्रा की बात बाप ने समझाई कि बच्चे वो स्टार्स हैं वहाँ के, रोशन करने इस माण्डवे को। तुम स्टार्स हो इस सृष्टि को दीपमाला बनाने, हर एक की ज्योति जगाने या हर एक की आत्मा को हीरे जैसा बनाने। तुमको कहा जाता है धरती के। वो अच्छे या तुम अच्छे? वो तो सदैव हैं ही हैं। वो क्या करते हैं? रोशनी देते आते हैं। वो तो हमेशा ही, सतयुग में भी ये है तो कलहयुग में ये है, ये तो है ही है। अभी तुम बच्चे देखो कितने अच्छे स्टार्स! इस समय में लक्की ज्ञान सितारे। तुम कितने लक्की सितारे हो! हाँ, इस भारत को स्वर्ग बनाते हो जो नर्क बन गया है। वो सितारे तो नर्क नहीं, वो तो हैं ही हैं। स्वर्ग में भी हैं तो नर्क में भी हैं। सदैव हैं ही हैं। देखो, तुम सितारे कैसे हो! सितारे हो ना! आत्मा चमकता है अजब सितारा भृकुटी के बीच में। इसे स्टार कहते हैं ना। उसको भी स्टार कहा जाता है। वो आसमान के स्टार्स, तुम इस समय में यहाँ एक बार धरती के स्टार बनते हो। लक्की सितारे जो ज्ञान सागर बाप से वर्सा लेकर फिर इस विश्व के मालिक बनते हो। देखो, बाप की याद से विश्व का मालिक अर्थात् योग से, याद से, इसको कहा जाता है योगबल, योगबल से विश्व के मालिक। तो बाप ने गाया ना– एक है बाहुबल, दूसरा है योगबल। तो देखो, कौन–सा मशहूर होना चाहिए? भारत का प्राचीन योगबल वो जानना चाहते हैं, जिस योगबल से बच्चों ने विश्व की बादशाही ली। अभी समझा अच्छी तरह से, कितनी महिमा है भारत के इस योग की। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो, तो उस योग की महिमा तो होगी ना। तो बिचारे सब कहते हैं कि हमको प्राचीन भारत का योगबल, जिस योगबल से ये बादशाही स्थापन हुई यानी इन्होंने ये आगे जन्म में योगबल से बाप के द्वारा ये प्रालब्ध पाई। अभी तो ये प्रालब्ध पा रहे हो ना। तो देखो, तुमको कितना नारायणी नशा होना चाहिए। ...अरे, कोई राजा का बच्चा हो, उनका नशा देखो, कोई महाराजा का बच्चा हो, फिर उसका नशा देखो। देखो आगाखाँ, उसके बच्चे का नशा देखो। कितनी

मिल्कियत छोड़कर जाते हैं। मिल्कियत मिलती ही रहती है। तुमको तो एक ही बार तुम्हारा भण्डारा भर देते हैं। भर दो, भर दो, भर दो वो यहाँ कहते हैं ना। ऐसे कहते हैं। वो कहते हैं महादेव का– बम–बम..... भर दो झोली, भर दो झोली, भर दो झोली। देखा है उनको ? ....माना वर्षा करो। .....की वर्षा करो। तो हमारी झोली भर जावे। अभी बिचारे वो तो जाते ही हैं शंकर के पास और उनको ये कहते हैं...वो धतूरा खाते हैं, भांग पीते हैं, फलाना करते हैं, सर्प...में पड़ा, वो झोली कैसे भरेगा! धतूरा खाने वाला किसकी झोली थोड़े ही भरेगा। नाम तो देखो शिवशंकर और धतूरा खाते हैं, सर्प पड़े हैं, भांग पीते हैं फलाना। देखो, जब कोई शिव के मंदिर में जाते हैं ना, वो भांग बहुत पीते हैं। ..उस भांग को कहा ही जाता है शंकर की बूटी। जो शंकर के भगत होते हैं ...। अभी ये तो तुमने समझा ना– ये बूटी कौन–सी है शिवबाबा की। इसको संजीवनी बूटी कहा जाता है। .....कोई अर्थ तो कुछ होना चाहिए ना। सिर्फ नाम धर देते हैं, बस। नहीं मीठे बच्चों, बाप कहते हैं कि तुम धंधाधोरी करो, सब कुछ करो, जो कुछ करना है सो करो। बाबा कोई भी मना नहीं करते हैं धंधे के लिए। सिर्फ बाप को याद करो और बाप से अपना वर्सा लेने का पुरुषार्थ करो और पवित्र तो रहना ही है। जाँच करते रहो कि हम ये देवता बनते हैं? इन जैसा बने हैं? अभी नहीं। अपने लिए यानी जितना हो सके याद में रहकर, भोजन बना करके और फिर खाओ। बड़ी ताकत। तुम्हारे लिए है ना। इसलिए ब्रह्मा भोजन बहुत नामी है। गाया जाता है कि देवताओं को भी ये ब्रह्मा भोजन की प्यास होती है। ऐसे बड़ाई देने के लिए। ये तुम जानते हो कि बरोबर शिव के भण्डारे से हम ब्राह्मण पढ़ते हैं। इसलिए इसकी महिमा बड़ी भारी है; क्योंकि ये ब्राह्मण योग में रह करके ये बनाते। योग की महिमा सुना ना! योगबल से जब तुम विश्व की बादशाही ले सकते हो ... विश्व को पवित्र बनाते हो ना, पावन बनाते हो ना, तो क्या तुम कोई चीज़ को पावन नहीं बना सकते हो! अच्छा, लाचारी कोई की होती है, बस बाबा कहते हैं याद में रह करके दृष्टि दो। जबकि विश्व को तुम पावन बनाते हो तो ये क्या है! थोड़ी सी लाचारी। जब लाचारी, हरेक आकर पूछते हैं– बाबा, हमको शुद्ध भोजन कैसे मिलता है? वो कहते हैं एक तो सीखो और.....फिर याद में रह करके अपना आपे ही कल्याण करो; परन्तु तुम याद में रहकर बना ही नहीं सकते हो। ये भी ख्याल करते हो कि हम बाबा की याद में अपने हाथ से भोजन बना रहे हैं। तुम जब भोजन बनाते हो बाबा की याद में, तुम याद कर ही नहीं सकते हो। याद इतनी है, झट कुछ न कुछ संकल्प कहाँ न कहाँ चला जाता, धंधे में, धोरी में, फलाने में, ग्राहक में, यहाँ–वहाँ। ...बाबा इतना बताते हैं ना, तुम भोजन अपने हाथ से... तुम ब्राह्मण हो ना, तुमको शूद्रों का तो खाना नहीं है। अच्छा, ब्राह्मण हो तो भी याद ज़रूर करना है एकदम। खाओ तो भी याद, तो फिर तुमको ताकत आएगी बहुत। वो भोजन में बड़ी ताकत आ जाएगी। पर याद करके खाते कहाँ हो! पूछो अपने से, हर एक से, जो रास्ते में यहाँ–वहाँ अपना बास्केट रखते हैं या कुछ भी, इसमें कुकर रखते हैं, कोई भी चीज़ रखते हैं, बनाते हैं याद करके। अच्छा, यहाँ बच्चे सब मिलकर जाते हैं, भोजन बनेगा। आज भी होगा किसका भोजन बनाने का। बाबा कह देते हैं– बच्चे, जब बनाओ, कम कार डे, दिल यार डे। तुम कर्म में रहते रहना और अपने माशूक, जिससे तुमको धन मिलता है, उनको याद करते रहना। अब फिर आ करके बाबा को रिज़ल्ट बताना हर एक– हम कितना समय याद किया बाप को भोजन बनाने के वक्त में। बाबा कहते हैं सारा वक्त बड़ा मुश्किल है। जो सारा वक्त जो भी कीचन में जाए, जो भी सारा वक्त उस याद में रह करके मदद करे, वो मेरे पास आकर ..बताए– बाबा, मैंने सारा समय, मेरा कोई भी बुद्धियोग कहाँ नहीं गया। .... फिर देखो, मैं उनको कितना आफरीन देता हूँ और समझता हूँ कि कमाल किया होगा। हो सकता है या कोई गपोड़ा तो नहीं मारते ? क्योंकि हमारे पास गपोड़ा बहुत मारते हैं। चार्ट आते थे। 75 परसेन्ट तक चार्ट आते थे। 75 परसेन्ट जो चार्ट भेजे थे, आज यहाँ

....। अभी कौन कहेगा 75 परसेन्ट चार्ट! चार्ट ऊपर जाना चाहिए या चार्ट नीचे चला जाना चाहिए? ऐसे भी होते हैं। बाबा के पास चार्ट आते हैं। ऐसे मत समझो कि नहीं आते हैं। बहुतों का चार्ट तो क्या, लाश ही गुम एकदम। ...अच्छा, चलो टोली खिलाओ। भोजन बनाने वाले को, अपना चार्ट रखना, जो बनाते हैं। (किसी ने कहा– आज जयपुर वाले) ..... कभी भी श्रीनाथ द्वारे जाओ, ढेर के ढेर और वहाँ पता है, कहाँ भोजन में वो भी न पड़े...। अभी ये तो तुमको करना है...क्योंकि साइलेन्स में बैठकर बनाना है। वो साइलेन्स के लिए नहीं कहते हैं। वो इसमें मुख से वो पड़े ना, इसलिए ये बंद करते हैं। ...इसके ऊपर में गीत है– ज्ञान के गोले, तीर–तोपों से भी तीखे। अभी शुरू कहाँ से होता है ये तो मुझे मालूम नहीं; पर गीत है इनका।....अननोन वॉरियर्स तुम हो। ये वॉरियर की सेना चाहिए ना बड़ी भारी। तुम्हारी बहुत भारी सेना है। समझा ना। लाखों की तादाद में, भल करोड़ों की तादाद में; परन्तु अननोन। तुम सब इतनी वृद्धि को पाती जाती हो और ये जो दुनिया है ना, इसको खाती जाती हो, खाती जाती हो। जैसे वो नोट को आग लगाकर दिखलाते हैं ना, ऐसे नोट होते हैं ना, यहाँ से आग लगती है, लग–2 करके खतम हो जाती है, तैसे तुम इस सारी दुनिया को हप कर रही हो। अभी तुमने इस सारी विश्व को मुना तक हप किया है। फिर आधा को मुना, सारा हप कर लेंगी तुम। कैसे? योगबल से। योगबल से सारे विश्व को तुम हप करने वाली अर्थात् उसके ऊपर विजय पहनने वाली। देखो, कितना तुम्हारा मर्तबा बड़ा भारी है! कितना तुम्हारा मीठा बाबा है! दुःख हर फिर सुख... हरिद्वार में ले जाते हैं। देखो, वो हरिद्वार झूठ है ना। वो भक्तिमार्ग का सब कुछ। यहाँ चुप। इसको कहा जाता है– सच्चा–2 आत्माओं और परमात्मा का मेला। ये मेला तो चलता है कोई आधाकल्प... 50 वर्ष और वो मेला तो तुम जन्म बाई जन्म करते आए हो। अनेक बार मेले हुए ये गंगा और सागर का फलाना स्नान करने का। ये मेला एक ही बार लगता है और ये कुम्भ का मेला, जिसको कहा जाता है आत्मा और परमात्मा का सच्चा, ये 50 वर्ष .... चलता है। चलता ही रहता है और वृद्धि को पाता रहता है। फिर तुमको .... जब पूरा अंदाज आ जाएगा और बाप को याद कर लेंगे तब फिर ये मेला हमेशा के लिए...। न वो मेला, न ये मेला। न पानी का मेला, कुम्भ का मेला, न फिर ये जो एक बार होता है, न ये मेला। ये मेले सब बंद हो जाएँगे। वो तो मेले नहीं हैं, वो मैले हैं और ये मेला सच्चा है, इसमें तुम शुद्ध बनते हो। उसमें ही छी–2 बनते हो, कपड़े और ही मैले होते जाते हैं और यहाँ तुम्हारा कपड़ा धो करके स्वच्छ हो जाता है। देखा, फर्क कितना है! हाँ, लो बच्ची। ...ये किसका देते हो? वो भूल करते हो, अज्ञानी हो। वो अभोक्ता है.....

अच्छा! मीठे–2, स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट, ऐसे कहते हैं ना। सतोप्रधान मीठे, सतो मीठे, पीछे रजो मीठे, तमो मीठे। तो तुम्हारे में सब क्वालिटीज़ हैं। वो बच्चे भी जानते हैं, बाबा भी जानते हैं कि इसमें वैराइटी है पुरुषार्थ अनुसार और फिर स्वीटेस्ट कौन हैं? जो बस, सर्विस, सर्विस और सर्विस। कल्याण करना। अंधे की लाठी बनना। ये बाप कहेंगे, बच्चे तो सभी बच्चे ही हैं। फिर भी कहते हैं जो अच्छे सर्विसेबुल बच्चे हैं उनका पद भी तो ऊँचा है। ऐसे मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।